

NCERT WALLAH

NCERT की पुस्तकों का सार



सिविल सेवा परीक्षाओं हेतु

विषय-सूची

| | | |
|-----|---|---------|
| 1. | भूगोल एक विषय के रूप में | 1-7 |
| 2. | पृथ्वी की उत्पत्ति एवं विकास | 8-17 |
| 3. | पृथ्वी की आंतरिक संरचना | 18-30 |
| 4. | महासागरों और महाद्वीपों का वितरण | 31-40 |
| 5. | भू-आकृतिक प्रक्रियाएँ | 41-50 |
| 6. | भू-आकृतियाँ तथा उनका विकास | 51-63 |
| 7. | वायुमंडल की संरचना एवं संगठन | 64-69 |
| 8. | सौर विकिरण, ऊष्मा संतुलन एवं तापमान | 70-76 |
| 9. | वायुमंडलीय परिसंचरण तथा मौसम प्रणालियाँ | 77-86 |
| 10. | वायुमंडल में जल | 87-91 |
| 11. | विश्व की जलवायु एवं जलवायु परिवर्तन | 92-104 |
| 12. | महासागरीय जल और उसका संचलन | 105-119 |
| 13. | पृथ्वी पर जीवन | 120-126 |
| 14. | जैव विविधता और संरक्षण | 127-130 |



भूगोल एक विषय के रूप में

संदर्भ: इस अध्याय में NCERT पाठ्यपुस्तक की कक्षा-XI (भौतिक भूगोल के मूल सिद्धांत) के अध्याय-1 का सारांश शामिल है।

भूमिका

भूगोल का अध्ययन एक स्वतंत्र विषय के रूप में किया जाता है। भूगोल का अध्ययन करते समय पूछा जाने वाला एक प्रासंगिक प्रश्न है- हमें भूगोल का अध्ययन क्यों करना चाहिए? इसका उत्तर यह है कि हम पृथ्वी के धरातल पर रहते हैं और हमारा जीवन, हमारे परिस्थान से अनेक रूपों से प्रभावित होता है। साथ ही भूगोल का अध्ययन हमें विविधताओं को समझने और समय एवं स्थान के संदर्भ में ऐसी विविधताओं को उत्पन्न करने वाले कारकों की खोज करने की क्षमता प्रदान करता है।

भूगोल: एक अवलोकन

- पृथ्वी की सतह एकरूप नहीं है। इसके भौतिक स्वरूप में भिन्नताएँ होती हैं। यहाँ पर्वत, पहाड़ियाँ, घाटियाँ, मैदान, पठार, महासागर, झीलें, मरुस्थलीय क्षेत्र आदि मिलते हैं।

भूगोल शब्द की उत्पत्ति:

अंग्रेजी शब्द **Geography (भूगोल)** की उत्पत्ति ग्रीक भाषा से हुई है, जो पृथ्वी के वर्णन से संबंधित है। यह दो ग्रीक शब्दों “Ge” जिसका अर्थ है “पृथ्वी” और “Graphia” जिसका अर्थ है “लेखन”, से मिलकर बना है।

- यहाँ सामाजिक एवं सांस्कृतिक तत्त्वों में भी भिन्नता पाई जाती है। यहाँ गाँव, शहर, सड़कें, रेलवे, बंदरगाह, बाजार और कई अन्य तत्त्व मौजूद हैं जो मानव द्वारा अपने सांस्कृतिक विकास की पूर्ण अवधि के दौरान विकसित हुए हैं।
- पृथ्वी पर यह भिन्नता भौतिक पर्यावरण और सामाजिक/सांस्कृतिक विशेषताओं के मध्य संबंधों को समझने में मदद करती है।
- अन्य शब्दों में कहें तो भूगोल, पृथ्वी का वर्णन है।
- सर्वप्रथम भूगोल शब्द का प्रयोग ग्रीक विद्वान **इरेटोस्थेनीज** (276-194 ईसा पूर्व) ने किया था। यह शब्द ग्रीक भाषा के दो मूल **Geo (पृथ्वी)** और **Graphos (विवरण)** से प्राप्त किया गया है। कुछ विद्वानों ने भूगोल को इस प्रकार भी परिभाषित किया है, “मानव के निवास स्थान के रूप में पृथ्वी का वर्णन।”

- “भूगोल का उद्देश्य धरातल की प्रादेशिक/क्षेत्रीय भिन्नताओं का वर्णन एवं व्याख्या करना है।” – रिचर्ड हार्टशोर्न
- “भूगोल धरातल के विभिन्न भागों में कारणात्मक रूप से संबंधित तथ्यों में भिन्नताओं का अध्ययन करता है।” – हैटनर
- “भूगोल, भूतल का अध्ययन है।” – कांट
- “भूगोल वह आभास्य विज्ञान है जो पृथ्वी की झलक स्वर्ग में देखता है।” – टॉलमी

भूगोल एक स्वतंत्र विषय के रूप में

- भूगोल अपनी विषय-वस्तु और कार्यप्रणाली में अन्य विज्ञान से भिन्न है, लेकिन साथ ही, अन्य विषयों से इसका निकटता से संबंध भी है। भूगोल सभी प्राकृतिक और सामाजिक विषयों से सूचनाधार प्राप्त कर उनका संश्लेषण करने का प्रयास करता है।
- यह पृथ्वी पर मौजूद विभिन्न घटनाओं का अध्ययन करता है। इसलिए, भूगोल को क्षेत्रीय विभेदन के अध्ययन के रूप में समझना तर्कसंगत है। इस प्रकार भूगोल उन सभी घटनाओं का अध्ययन करने के लिए जाना जाता है जो क्षेत्रीय संदर्भ में भिन्न होती हैं।
- भूगोलवेत्ता न केवल पृथ्वी की सतह पर होने वाली घटनाओं में इन विविधताओं का अध्ययन करते हैं, बल्कि उन अन्य कारकों के साथ संबंधों का भी अध्ययन करते हैं जो इन विविधताओं का कारण बनते हैं।

- इस प्रकार, भूगोल उद्देश्य किन्हीं दो तत्त्वों के बीच या एक से अधिक तत्त्वों के बीच कार्य-कारण संबंधों का पता लगाना है। यह न केवल व्याख्या में मदद करता है बल्कि भविष्य में होने वाली घटनाओं का पूर्वानुमान भी लगाता है।

विचारणीय बिंदु

प्रारंभ में भूगोल का विषय केवल भौतिक भूगोल तक ही सीमित था। कालांतर में मानव भूगोल को शिक्षण के विषय (Discipline) का एक अभिन्न अंग माना गया। क्या आप उन तरीकों के संबंध में विचार कर सकते हैं जिनसे भौतिक परिदृश्य मानव संस्कृति के विकास को संचालित करता है और जिन तरीकों से संस्कृति भौतिक परिदृश्य के संशोधन के रूप में कार्य कर रही है?



प्रकृति और मनुष्य के बीच परस्पर निर्भरता

- भौतिक और मानवीय, दोनों प्रकार की भौगोलिक घटनाएँ स्थिर नहीं हैं, बल्कि अत्यधिक गतिशील हैं। प्रकृति और मानव अंतःक्रियाओं का अध्ययन, एक एकीकृत संपूर्ण अध्ययन है।
- एक तरफ जहाँ प्रकृति ने मानव के क्रियाकलापों को नियंत्रित किया है तो वहीं दूसरी तरफ मानव ने भी अपने हिसाब से प्रकृति में आवश्यक संशोधन किए हैं या फिर कुछ हद तक स्वयं को अनुकूलित भी किया है।
- 'मानव' 'प्रकृति' का अभिन्न अंग है और 'प्रकृति' पर 'मानव' के अस्तित्व की छाप है। वर्तमान समाज ने प्रौद्योगिकी का आविष्कार और उपयोग करके अपने प्राकृतिक पर्यावरण को संशोधित किया है एवं इस प्रकार, प्रकृति द्वारा प्रदान किए गए संसाधनों के उपयोग का विस्तार किया है।
- प्रौद्योगिकी ने श्रम दक्षता बढ़ाने में मदद की और अवकाश का प्रावधान करते हुए मनुष्य को जीवन की उच्च आवश्यकताओं को पूरा करने का अवसर प्रदान किया। इससे उत्पादन के पैमाने और श्रम की गतिशीलता में भी वृद्धि हुई। प्रौद्योगिकी की सहायता से मनुष्य आवश्यकता की अवस्था से स्वतंत्रता की ओर अग्रसर हुआ है। अब हम मानवकृत प्रकृति और प्रकृतिकृत मानव को पाते हैं तथा भूगोल इनके पारस्परिक संबंध का अध्ययन करता है। इसलिए एक सामाजिक विज्ञान के रूप में, भूगोल इसी क्षेत्रीय समाकलन एवं संगठन का अध्ययन करता है।

प्रश्न, जो भूगोल से संबंधित हैं:

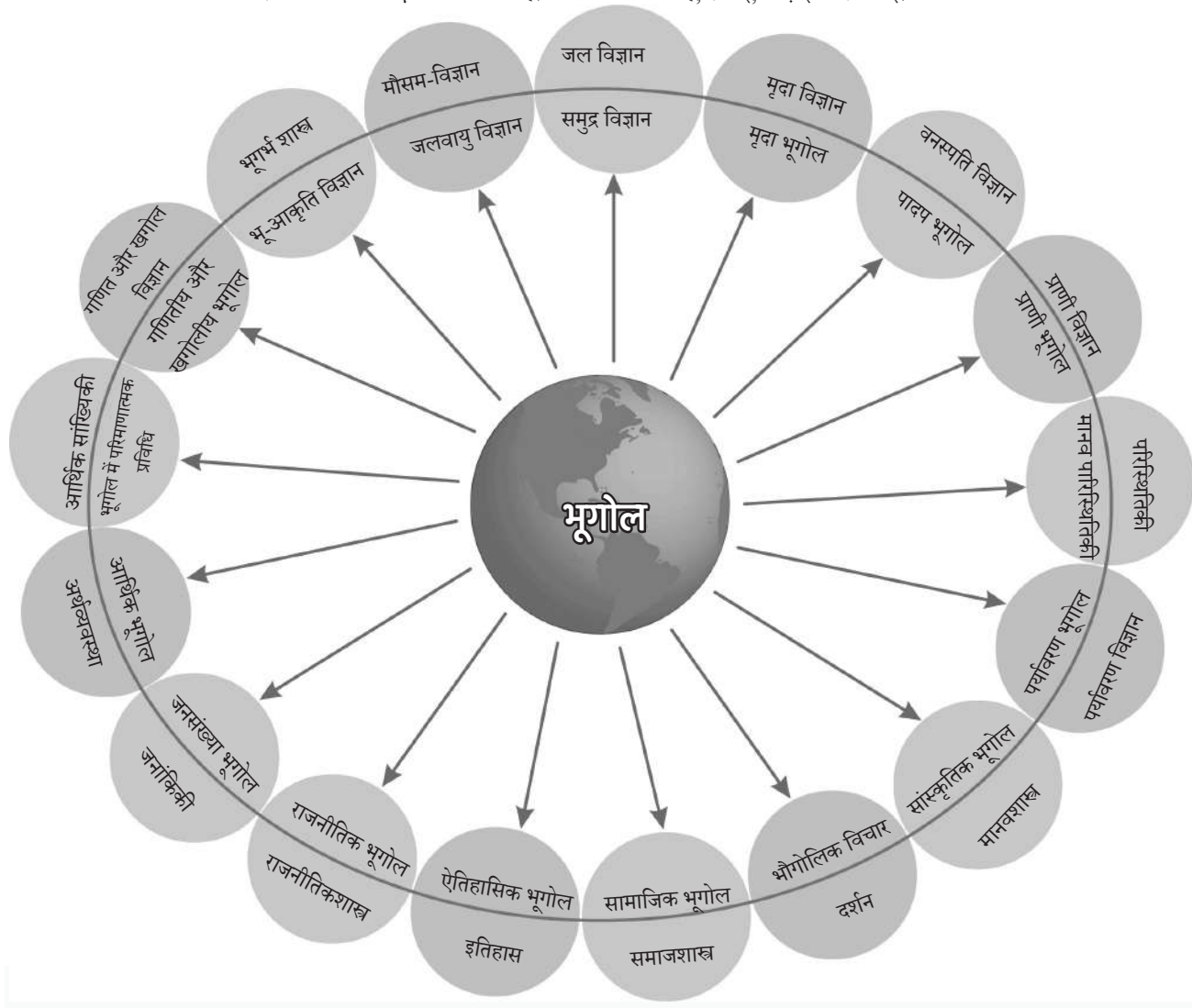
- एक वैज्ञानिक-विषय के रूप में भूगोल तीन वर्गीकृत प्रश्नों से संबंधित है:
 - कुछ प्रश्न धरातल पर पाए जाने वाले प्राकृतिक और सांस्कृतिक विशेषताओं के प्रतिरूप की पहचान से जुड़े होते हैं, जो 'क्या' प्रश्न के उत्तर देते हैं।
 - कुछ प्रश्न पृथ्वी पर भौतिक सांस्कृतिक तत्त्वों के वितरण से संबंधित होते हैं, जो 'कहाँ' प्रश्न से संबंधित होते हैं।
 - यह तृतीय प्रश्न व्याख्या अथवा तत्त्वों एवं तथ्यों के मध्य कार्य-कारण संबंध से जुड़ा है। भूगोल का यह प्रश्न 'क्यों'; प्रश्न से संबंधित है।
- एक विषय के रूप में भूगोल का क्रोड क्षेत्र से संबंधित होता है तथा स्थानिक विशेषताओं एवं गुणों का विवेचन करता है। यह क्षेत्र में तथ्यों के वितरण, स्थिति एवं केंद्रीकरण के प्रतिरूप का अध्ययन करता है और इन प्रतिरूपों की व्याख्या करते हुए उनका स्पष्टीकरण देता है।

भूगोल एक समाकलन के रूप में

- भूगोल एक संश्लेषणात्मक (Synthesis) विषय है, जो क्षेत्रीय संश्लेषण तथा इतिहास कालिक संश्लेषण का प्रयास करता है। इसके उपागम की प्रकृति समग्रतात्मक (Holistic) है। यह इस तथ्य को मान्यता है कि विश्व एक परस्पर निर्भर तंत्र है।
- एक एकीकृत विषय के रूप में भूगोल का कई प्राकृतिक और सामाजिक विज्ञान के साथ संबंध है। सभी विज्ञान का, चाहे वे प्राकृतिक हों या सामाजिक, एक ही मूल उद्देश्य होता है: वास्तविकता को समझना।
- भूगोल अपने स्थानिक परिप्रेक्ष्य में यथार्थता को समग्रता में समझने में मदद करता है। यह वास्तविकता के वर्गों में संबंधित घटनाओं के जुड़ाव को समझने का भी प्रयास करता है।
- इस प्रकार, एक भूगोलवेत्ता को सभी संबंधित क्षेत्रों की व्यापक समझ होनी आवश्यक है, ताकि वह उन्हें तार्किक रूप से एकीकृत करने में सक्षम हो सके। क्षेत्रों का एकीकरण हमें किसी विशेष स्थिति या परिदृश्य को व्यापक रूप से समझने में मदद करता है।
- **उदाहरण के लिए:** भारत में हिमालय एक महान अवरोधक के रूप में देश की रक्षा करता है, परंतु उसमें विद्यमान दर्रे, मध्य एशिया से प्रवासियों और आक्रमणकारियों को मार्ग भी प्रदान करते हैं। सामुद्रिक किनारे पूर्वी और दक्षिण-पूर्व एशिया, यूरोप एवं अफ्रीका के लोगों के साथ संपर्क को प्रोत्साहित करते हैं। नौ-संचालन तकनीकी ने यूरोपीय देशों को भारत सहित एशिया और अफ्रीकी राष्ट्रों पर उपनिवेशीकरण करने में सहायता की।
- भौगोलिक तत्त्वों द्वारा विश्व के विभिन्न भागों में इतिहास की धारा के अपरिवर्तन के अनेक उदाहरण मिलते हैं।



- प्रत्येक भौगोलिक तथ्य समय के साथ परिवर्तित होता रहता है और समय के परिप्रेक्ष्य में उसकी व्याख्या की जा सकती है। यही कारण है कि अध्ययन के चौथे आयाम के रूप में समय भौगोलिक अध्ययन का एक अभिन्न अंग है। अन्य तीन आयाम हैं, लंबाई, चौड़ाई और मोटाई।



चित्र 1.1: भूगोल तथा इसका अन्य विषयों से संबंध

भूगोल की शाखाएँ

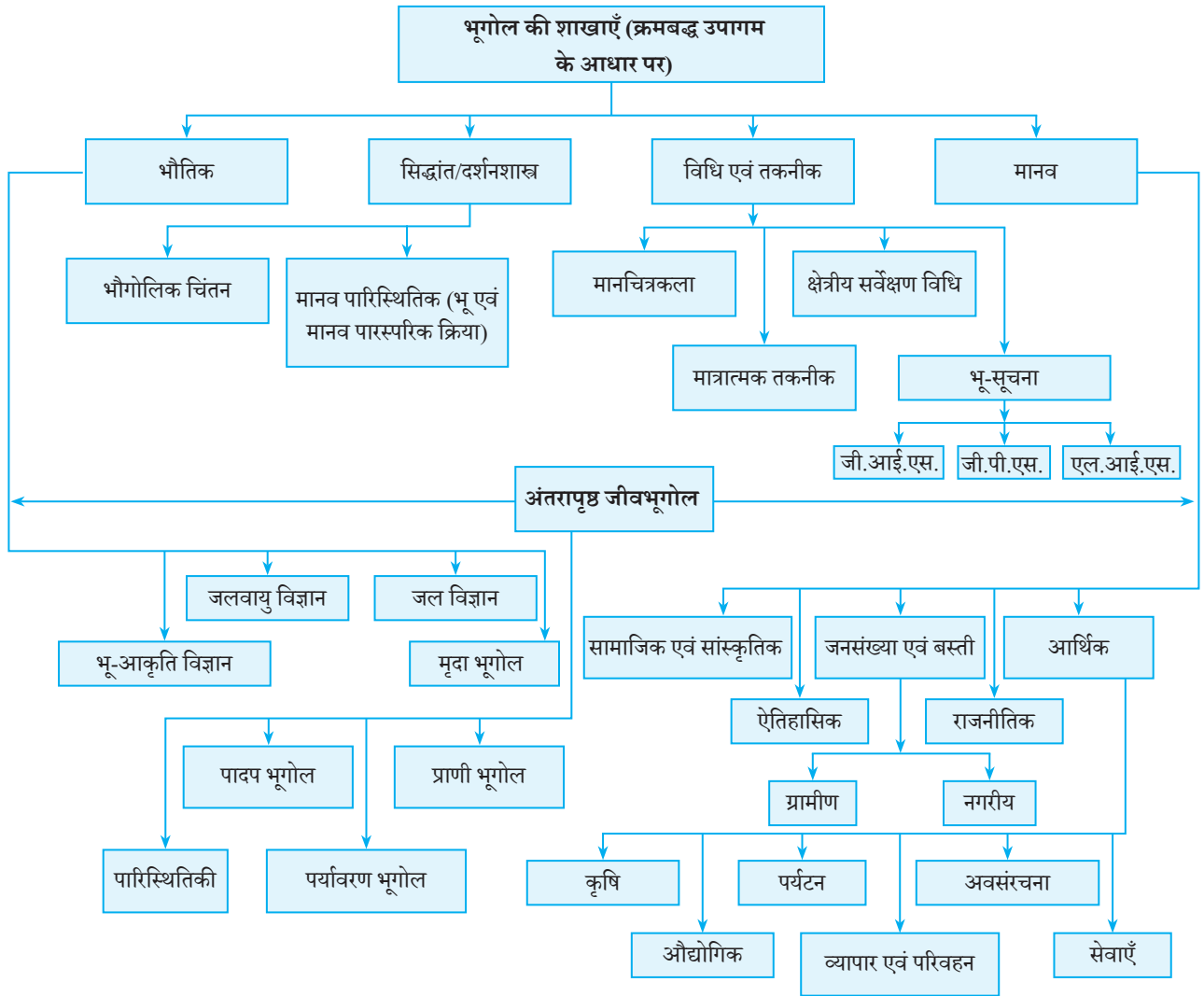
भूगोल, अध्ययन का एक अंतर्निर्दिष्ट (Interdisciplinary) विषय है। प्रत्येक विषय का अध्ययन किसी-न-किसी उपागम के अनुसार किया जाता है। भूगोल के अध्ययन के प्रमुख उपागम (i) क्रमबद्ध (Systematic) तथा (ii) प्रादेशिक (Regional) हैं।

विषयवस्तु या क्रमबद्ध उपागम

- **विषय-वस्तुगत (क्रमबद्ध) उपागम:** यह उपागम एक जर्मन भूगोलवेत्ता अलेक्जेंडर वॉन हम्बोल्ट (1769-1859) द्वारा प्रस्तुत किया गया था। इस दृष्टिकोण के अनुसार (चित्र 1.2 देखें) एक ही भौगोलिक कारक को लेकर समस्त विश्व या विश्व के किसी भी भाग का अध्ययन किया जाता है। उदाहरणस्वरूप, यदि कोई प्राकृतिक वनस्पति का अध्ययन करने में रुचि रखता है, तो सर्वप्रथम विश्व स्तर पर इसका अध्ययन किया जाएगा। अन्य भौगोलिक कारक धरातल, जलवायु, मृदा, परिवहन, व्यापार, जनसंख्या, जल प्रवाह, कृषि, उद्योग आदि हैं।
- इन तत्त्वों का क्षेत्र विशेष के संदर्भ में पृथक-पृथक अध्ययन किया जाता है। यह क्षेत्र कोई देश, महाद्वीप या विश्व हो सकता है। इस विधि या उपागम को **प्रकरण विधि/उपागम (Topical Approach)** भी कहते हैं, क्योंकि इसमें अलग-अलग **प्रकरण (Topics)** का अध्ययन करके ही भूगोल का ज्ञान प्राप्त किया जाता है।

प्रादेशिक भूगोल उपागम

भूगोल की मुख्य विशेषताओं में से एक द्वैतवाद भी है, यह अध्ययन में महत्व दिए गए पहलू पर निर्भर करता है। पहले विद्वान **भौतिक भूगोल** पर बल देते थे परंतु बाद में स्वीकार किया गया कि मनुष्य धरातल का समकालिक भाग है, वह प्रकृति का अभिन्न अंग हैं। इस प्रकार, मानवीय गतिविधियों पर बल देने के साथ **मानव भूगोल** का विकास हुआ।



चित्र 1.2: भूगोल की शाखाएँ (क्रमबद्ध उपागम के आधार पर)

भौतिक भूगोल:

भौतिक भूगोल का संबंध पृथ्वी की सतह पर वायु, जल और मिट्टी सहित भौतिक पहलुओं के अध्ययन से है। इसको निम्नलिखित भागों में समझा जा सकता है:-

- भू-आकृति विज्ञान:** भू-आकृति विज्ञान, भू-आकृतियों, उनके विकास और संबंधित प्रक्रियाओं का अध्ययन करता है।
- जलवायु विज्ञान:** जलवायु विज्ञान में वायुमंडल की संरचना और मौसम के तत्वों तथा जलवायु के तत्व एवं जलवायु के प्रकारों व क्षेत्रों का अध्ययन शामिल है।
- जल-विज्ञान:** जलविज्ञान महासागरों, झीलों, नदियों और अन्य जल निकायों सहित पृथ्वी की सतह पर जल की सीमा तथा मानव जीवन एवं उनकी गतिविधियों सहित विभिन्न जीवन रूपों पर इसके प्रभाव का अध्ययन करता है।
- मृदा भूगोल:** मृदा भूगोल मृदा के निर्माण, मृदा के प्रकार, उसकी उर्वरता, स्थिति, वितरण और उपयोग की प्रक्रियाओं का अध्ययन करता है।



ONLYIAS
BY PHYSICS WALLAH

NCERT WALLAH

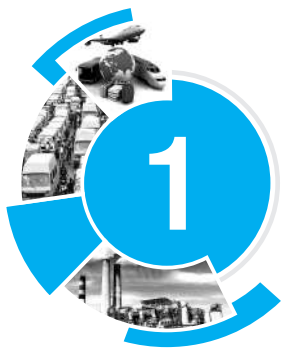
NCERT की पुस्तकों का सार



सिविल सेवा परीक्षाओं हेतु

विषय-सूची

| | | |
|----|--|--------|
| 1. | मानव भूगोल: प्रकृति एवं विषय क्षेत्र | 1-4 |
| 2. | विश्व जनसंख्या: वितरण, घनत्व और वृद्धि | 5-31 |
| 3. | प्राथमिक क्रियाएँ | 32-53 |
| 4. | द्वितीयक क्रियाएँ | 54-66 |
| 5. | तृतीयक और चतुर्थक गतिविधियाँ | 67-73 |
| 6. | व्यापार, परिवहन और संचार | 74-96 |
| 7. | संसाधन | 97-138 |



मानव भूगोल: प्रकृति एवं विषय क्षेत्र

संदर्भ: इस अध्याय में कक्षा-XII एनसीईआरटी (मानव भूगोल के मूल सिद्धांत) के अध्याय-1 का सारांश शामिल किया गया है।

परिचय

मानव भूगोल भौतिक / प्राकृतिक और मानवीय जगत के बीच संबंध, मानवीय परिघटनाओं का स्थानिक वितरण तथा उनके घटित होने के कारण एवं विश्व के विभिन्न भागों में सामाजिक व आर्थिक विभिन्नताओं का अध्ययन करता है। एक विषय के रूप में भूगोल का मुख्य स्रोत पृथ्वी को मानव के घर के रूप में समझने पर ध्यान केंद्रित करना और उन सभी तत्वों का अध्ययन करना है, जिन्होंने मानव जीवन को पोषित किया है। अतः इसमें प्रकृति और मानव के अध्ययन पर बल दिया जाता है। यह भौतिक और मानवीय पहलुओं के बीच विभाजन को कम करके, एक समग्र दृष्टिकोण पर जोर देता है। मानव भूगोल प्रायः अपने विषयों का वर्णन करने के लिए पृथ्वी के “रूप”, चक्रवात की “आँख”, नदी के “मुख” और परिवहन के जाल को “परिसंचरण की धमनियों” जैसे शारीरिक रूपकों का उपयोग करता है। प्रदेशों, गाँवों, नगरों और देशों को जीवित संस्थाओं के रूप में चित्रित करता है। संक्षेप में, मानव भूगोल वैश्विक स्तर पर प्रकृति और मानव अस्तित्व के बीच परस्पर जटिल क्रिया का अध्ययन करता है।

मानव भूगोल की परिभाषाएँ

भूगोलवेत्ताओं ने मानव भूगोल की परिभाषा दी है; इनमें से कुछ निम्नलिखित हैं:

- ❑ **रैटजेल:** “मानव भूगोल मानव समाजों और धरातल के बीच संबंधों का संश्लेषित अध्ययन है”।
 - उपरोक्त परिभाषा में संश्लेषण पर बल दिया गया है।
- ❑ **एलेन सी. सेंपल:** “मानव भूगोल अस्थिर पृथ्वी और क्रियाशील मानव के बीच परिवर्तनशील संबंधों का अध्ययन है।”
 - सेंपल की परिभाषा में संबंधों की गत्यात्मकता मुख्य शब्द है।
- ❑ **पॉल विडाल-डी-ला ब्लाश:** “हमारी पृथ्वी को नियंत्रित करने वाले भौतिक नियमों और इस पर रहने वाले जीवों के मध्य संबंधों के अधिक संश्लेषित ज्ञान से उत्पन्न संकल्पना”।
 - मानव भूगोल पृथ्वी और मानव के बीच अंतर्संबंधों की एक नई संकल्पना प्रस्तुत करता है।

मानव भूगोल की प्रकृति

- ❑ मानव भूगोल भौतिक पर्यावरण तथा मानव-जनित सामाजिक सांस्कृतिक पर्यावरण के अंतर्संबंधों का अध्ययन उनकी परस्पर अन्योन्यक्रिया के द्वारा करता है।
- ❑ मानव भूगोल इस बात का परीक्षण करता है कि किस प्रकार मनुष्य आपसी सहभागिता के माध्यम से भौतिक पर्यावरण से संसाधनों का उपयोग करके गृह, गाँव, नगर, परिवहन नेटवर्क, उद्योग और खेत, पत्तन, जैसी भौतिक संस्कृति के तत्वों का निर्माण करते हैं।
- ❑ यह अंतःक्रिया पारस्परिक है, क्योंकि मानवीय क्रियाएँ भौतिक पर्यावरण को महत्वपूर्ण रूप से परिवर्तित कर देती हैं, जो सापेक्ष रूप से मानव जीवन को प्रभावित करती हैं।

मानव का प्रकृतिकरण और प्रकृति का मानवीकरण

- ❑ मनुष्य अपने प्रौद्योगिकी की सहायता से अपने भौतिक पर्यावरण से अन्योन्यक्रिया करता है। यह महत्वपूर्ण नहीं है, कि मानव क्या उत्पन्न और निर्माण करता है बल्कि यह अत्यन्त महत्वपूर्ण है कि वह ‘किन उपकरणों तथा तकनीकों की सहायता से उत्पादन एवं निर्माण करता है’?
- ❑ प्रौद्योगिकी किसी समाज के सांस्कृतिक विकास के स्तर की सूचक होती है। मानव प्रकृति के नियमों को बेहतर ढंग से समझने के बाद ही प्रौद्योगिकी का विकास कर पाया।

- उदाहरणार्थ, घर्षण और ऊष्मा की संकल्पनाओं ने अग्नि की खोज में हमारी सहायता की। इसी प्रकार **डी.एन.ए. और आनुवांशिकी के रहस्यों** की समझ ने हमें अनेक बीमारियों पर विजय पाने के योग्य बनाया।
- ये तकनीकी प्रगति मनुष्यों को प्रकृति के संसाधनों का दोहन करने में सक्षम बनाती है, जिससे पर्यावरणीय अंतःक्रिया के तीन चरण सामने आते हैं:
 - **पर्यावरणीय निश्चयवाद:** इस स्तर पर, प्रकृति को एक शक्तिशाली कारक के रूप में देखा जाता है, जिसका आदर किया जाता है और संसाधनों के लिए मनुष्य की इस पर प्रत्यक्ष निर्भरता के कारण पर्यावरण का संरक्षण किया जाता है। समाज में तकनीकी विकास कम है और सामाजिक संरचनाएँ प्राचीन हैं, जिसके परिणामस्वरूप प्राकृतिक मानव प्रकृति का सम्मान करता है एवं उससे डरता है।
 - **संभववाद:** प्रकृति मनुष्य को अवसर प्रदान करती है जिसका लाभ वे सामाजिक और सांस्कृतिक रूप से विकसित होने पर उठा सकते हैं। प्रकृति धीरे-धीरे मानव प्रयासों की छाप छोड़ती है, और तकनीकी प्रगति आवश्यकता से स्वतंत्रता की ओर संक्रमण की ओर ले जाती है। मनुष्य पर्यावरणीय संसाधनों के साथ सांस्कृतिक परिदृश्य को आकार देते हुए संभावना उत्पन्न करते हैं।
 - **नव-निश्चयवाद या रुको और जाओ निश्चयवाद:** भूगोलवेत्ता **ग्रिफ़िथ टेलर** द्वारा प्रस्तावित यह अवधारणा पर्यावरणीय निश्चयवाद और संभववाद के मध्य संतुलन साधती है। यह संकल्पना दर्शाती है कि न तो यहाँ नितान्त आवश्यकता की स्थिति (पर्यावरणीय निश्चयवाद) है और न ही नितान्त स्वतंत्रता (संभववाद) की दशा है। इसका अर्थ है कि प्राकृतिक नियमों का अनुपालन करके हम प्रकृति पर विजय प्राप्त कर सकते हैं।

समय के इतिहास की दृष्टि से मानव भूगोल

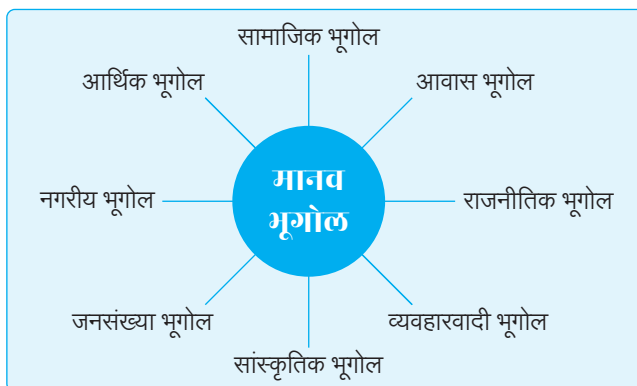
- मानव भूगोल, जो मनुष्य और उसके पर्यावरण के बीच की अंतःक्रिया पर केंद्रित है, का इतिहास बहुत पुराना है, जो विभिन्न पारिस्थितिक स्थितियों में मनुष्य की उत्पत्ति के साथ आरंभ हुआ। यह अनुशासन समय के साथ विकसित हुआ है, जो बदलते दृष्टिकोण और महत्त्व को दर्शाता है।
- आरंभ में समाजों के बीच सीमित संपर्क था और विभिन्न क्षेत्रों के बारे में जानकारी बहुत कम थी। खोजकर्ताओं और यात्रियों ने धीरे-धीरे इस ज्ञान का विस्तार किया, विशेषकर पंद्रहवीं सदी के अंत में, यूरोप के खोजपूर्ण काल के दौरान।
- उपनिवेशवाद ने अन्वेषण और सूचना संग्रह में अभूतपूर्व वृद्धि की। यह ऐतिहासिक अवलोकन मानव भूगोल के निरंतर विकास को दर्शाता है।

तालिका 1.1: मानव भूगोल की अवस्थाएँ और प्रणोद

| समयावधि | उपागम | लक्षण |
|---|--|---|
| आरंभिक औपनिवेशिक युग | अन्वेषण और विवरण | □ साम्राज्यवादी और व्यापारिक रुचियों ने नए क्षेत्रों में खोजों व अन्वेषणों को प्रोत्साहित किया। क्षेत्र का विश्वज्ञानकोशीय विवरण भूगोलवेत्ताओं द्वारा वर्णन का महत्त्वपूर्ण पक्ष बना। |
| उत्तर औपनिवेशिक युग | प्रादेशिक विश्लेषण | □ प्रदेश के सभी पक्षों के विस्तृत वर्णन किए गए। □ मत यह था कि सभी प्रदेश पूर्ण, अर्थात् पृथ्वी के भाग हैं; अतः इन भागों की पूरी समझ पृथ्वी पूर्ण रूप से समझने में सहायता करेगी। |
| अंतर-युद्ध अवधि के बीच 1930 का दशक | क्षेत्रीय विभेदन | □ एक प्रदेश अन्य प्रदेशों से किस प्रकार और क्यों भिन्न है यह समझने के लिए तथा किसी प्रदेश की विलक्षणता की पहचान करने पर बल दिया जाता था। |
| 1950 के दशक के अंत से 1960 के दशक के अंत तक | स्थानिक संगठन | □ कंप्यूटर और परिष्कृत सांख्यिकीय विधियों के प्रयोग के लिए विशिष्ट मानचित्र और मानवीय परिघटनाओं के विश्लेषण में प्रायः, भौतिकी के नियमों का अनुप्रयोग किया जाता था। □ इस प्रावस्था को विभिन्न मानवीय क्रियाओं के मानचित्र योग्य प्रतिरूपों की पहचान करना इसका मुख्य उद्देश्य था। |
| 1970 का दशक | मानवतावादी, आमूलवादी और व्यवहारवादी विचारधाराओं का उदय | □ मात्रात्मक क्रांति से उत्पन्न असंतुष्टि और अमानवीय रूप से भूगोल के अध्ययन के चलते मानव भूगोल में 1970 के दशक में तीन नए विचारधाराओं का जन्म हुआ। □ इन विचारधाराओं के अभ्युदय से मानव भूगोल सामाजिक-राजनीतिक यथार्थ के प्रति अधिक प्रासंगिक हो गया। |
| 1990 का दशक | भूगोल में उत्तर-आधुनिकतावाद | □ वृहत् सामान्यीकरण तथा मानवीय दशाओं की व्याख्या करने वाले वैश्विक सिद्धांतों की प्रयोज्यता पर प्रश्न उठने लगे। अपने आप में प्रत्येक स्थानीय संदर्भ की समझ के महत्त्व पर जोर दिया गया। |

मानव भूगोल संबंधी दृष्टिकोण

- मानव भूगोल में कल्याणपरक या मानवतावादी विचारधारा मुख्य रूप से सामाजिक कल्याण के विभिन्न आयामों पर केंद्रित है, जिसमें आवास, स्वास्थ्य सेवा और शिक्षा जैसे कारक शामिल हैं। भूगोलवेत्ताओं ने स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम में “सामाजिक कल्याण के रूप में भूगोल” नामक एक पाठ्यक्रम भी शुरू किया है।
- आमूलवादी (रेडिकल) विचारधारा ने निर्धनता, वंचना और सामाजिक असमानता की व्याख्या करने के लिए मार्क्सवादी सिद्धांत का उपयोग किया। समकालीन सामाजिक समस्याओं का संबंध पूँजीवाद के विकास से था।
- व्यवहारवादी विचारधारा ने प्रत्यक्ष जीवन के अनुभवों के साथ-साथ मानव जातीयता, प्रजाति और धर्म जैसे कारकों के आधार पर सामाजिक संवर्गों के दिक काल को समझते हैं और उसके साथ अंतःक्रिया करते हैं।



चित्र 1.1: मानव भूगोल के क्षेत्र और उपक्षेत्र

- मानव भूगोल मानव अस्तित्व के विभिन्न पहलुओं और उनके भौगोलिक संदर्भों के बीच संबंध को स्पष्ट करने का प्रयास करता है।
- परिणामस्वरूप, यह एक स्पष्ट रूप से अंतर-अनुशासनात्मक लक्षण को ग्रहण करता है, तथा सामाजिक विज्ञान के संबंधित क्षेत्रों के साथ प्रभावी संबंध स्थापित करता है।
- धरातल पर मानवी सम्बन्धी साक्ष्यों की उपस्थिति के बारे में जानकारी प्राप्त करने और उसे स्पष्ट करने के लिए इस अंतर-अनुशासनात्मक दृष्टिकोण को अपनाया जाता है। ज्ञान के विस्तार के साथ, मानव भूगोल के नए उपक्षेत्र इस प्रकार विकसित हुए हैं:

तालिका 1.2: मानव भूगोल और सामाजिक विज्ञान के सहयोगी अनुशासन

| मानव भूगोल के क्षेत्र | उप क्षेत्रों | सामाजिक विज्ञान के सहयोगी विषयों के साथ इंटरफेस |
|-----------------------|-------------------------|---|
| सामाजिक भूगोल | | सामाजिक विज्ञान – समाजशास्त्र |
| | व्यवहारवादी भूगोल | मनोविज्ञान |
| | सामाजिक कल्याण का भूगोल | कल्याण अर्थशास्त्र |
| | अवकाश का भूगोल | समाजशास्त्र |
| | सांस्कृतिक भूगोल | मानवविज्ञान |
| | लिंग भूगोल | समाजशास्त्र, मानवविज्ञान, महिला अध्ययन |
| | ऐतिहासिक भूगोल | इतिहास |
| | चिकित्सा भूगोल | महामारी विज्ञान |
| नगरीय भूगोल | | नगरीय अध्ययन और नियोजन |
| राजनीतिक भूगोल | | राजनीति विज्ञान |
| | निर्वाचन भूगोल | चुनाव विश्लेषण |
| | सैन्य भूगोल | सैन्य विज्ञान |
| जनसंख्या भूगोल | | जनांकिकी |
| आवास भूगोल | | नगर/ग्रामीण नियोजन |



ONLYIAS
BY PHYSICS WALLAH

NCERT WALLAH

NCERT की पुस्तकों का सार



सिविल सेवा परीक्षाओं हेतु

विषय-सूची

| | | |
|----|----------------------------|-------|
| 1. | अवस्थिति | 1-6 |
| 2. | संरचना तथा भू-आकृति स्वरूप | 7-14 |
| 3. | अपवाह तंत्र | 15-26 |
| 4. | जलवायु | 27-44 |
| 5. | प्राकृतिक खतरे और आपदाएँ | 45-60 |
| 6. | मृदा | 61-68 |
| 7. | प्राकृतिक वनस्पति | 69-78 |



अवस्थिति

संदर्भ: इस अध्याय में NCERT की कक्षा-VI (पृथ्वी- हमारा आवास) के अध्याय 6, कक्षा IX (समकालीन भारत) के अध्याय-1 और कक्षा-XI (भारत - भौतिक पर्यावरण) के अध्याय-1 का सारांश शामिल है।

परिचय

भारत विशाल भौगोलिक विस्तार वाला देश है। इसका क्षेत्रफल 3.28 मिलियन वर्ग किलोमीटर है, जो विश्व के कुल क्षेत्रफल का 2.4 प्रतिशत है। उत्तर में, यह विशाल हिमालय से घिरा है, पश्चिम में अरब सागर है, पूर्व में बंगाल की खाड़ी है और दक्षिण में हिंद महासागर है, जो भारतीय प्रायद्वीप के तटों से संलग्न है।

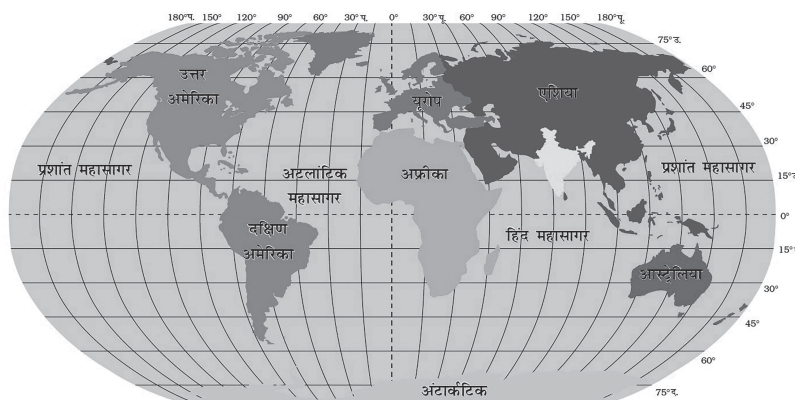
विचारणीय बिंदु

ऐतिहासिक रूप से, भारत की स्थिति ने उसे अपने पूरे इतिहास में विश्व व्यापार में एक केंद्रीय स्थान बनाए रखने में मदद की है। दूसरी ओर इसने भारतीय राजनीतिक संस्थाओं के विकास में बाधा डाली है और उन्हें हिमालय और हिंद महासागर की सीमा तक सीमित कर दिया है। क्या आपको लगता है कि विश्व मानचित्र पर भारत का स्थान दोधारी तलवार है? यदि हाँ, तो भारत की स्थिति के कारण उत्पन्न होने वाले लाभ और हानियों का पता लगाएँ।



भारत और विश्व

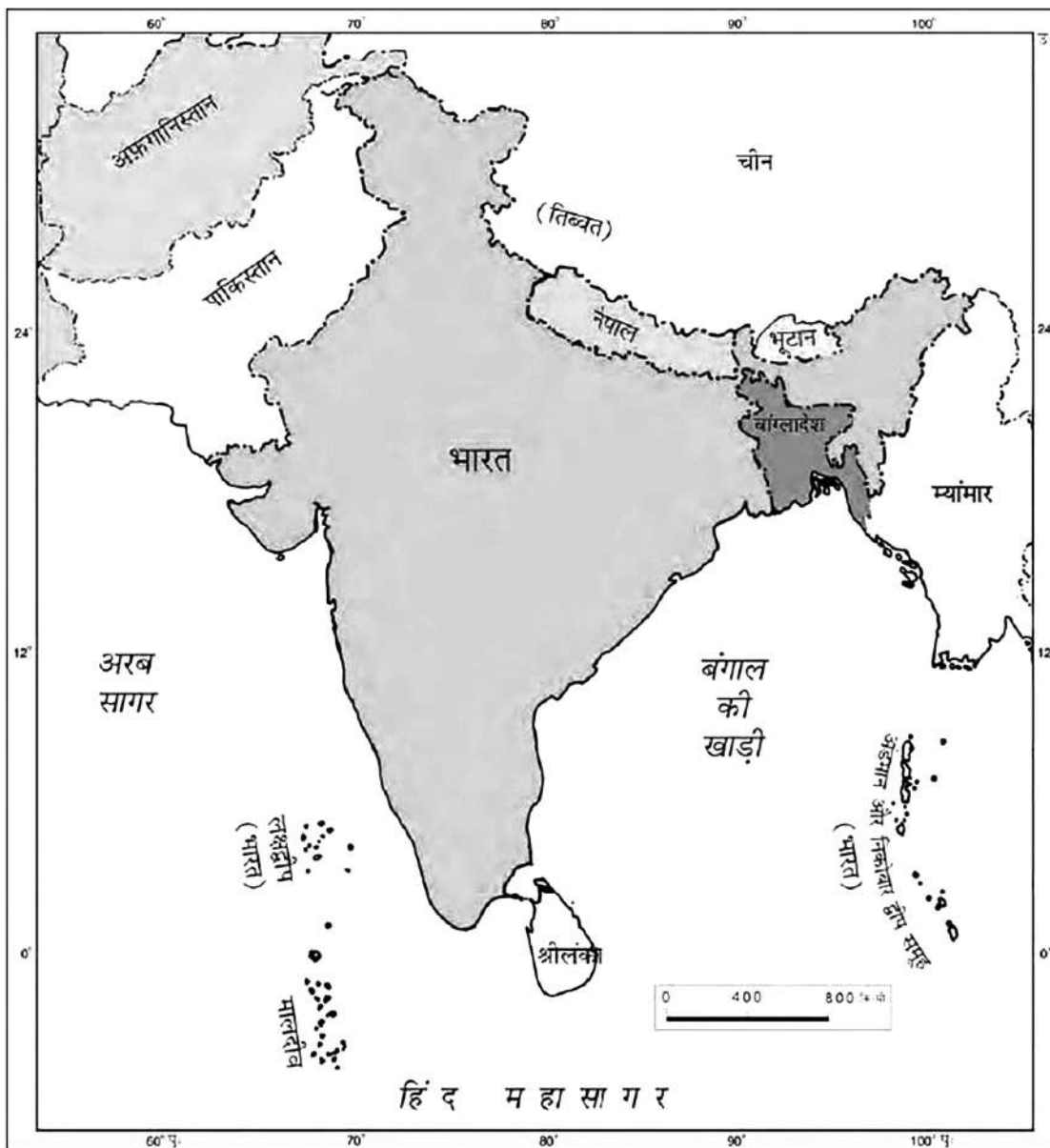
- भारतीय भूभाग एशिया महाद्वीप के पूर्व और पश्चिम एशिया के मध्य में स्थित है। (चित्र 1.1)
- ट्रांस-इंडो महासागरीय मार्ग, जो पश्चिम में यूरोप के देशों और पूर्वी एशिया के देशों को जोड़ते हैं, भारत को एक रणनीतिक केंद्रीय स्थिति प्रदान करते हैं।
- दक्कन प्रायद्वीप हिंद महासागर में फैला हुआ है, इस प्रकार भारत को पश्चिमी तट से पश्चिम एशिया, अफ्रीका और यूरोप के साथ इसके अलावा पूर्वी तट से दक्षिण पूर्व और पूर्वी एशिया के साथ निकट संपर्क स्थापित करने में मदद मिलती है।
- हिन्द महासागर में किसी देश की तटीय सीमा भारत के जैसी नहीं है, भारत की इसी महत्वपूर्ण स्थिति के कारण हिन्द महासागर का नाम इसके नाम पर रखा गया।



चित्र 1.1: भारत और विश्व

भारत के पड़ोसी देश

- भारत एशिया महाद्वीप के दक्षिण-मध्य भाग में स्थित है, इसकी सीमा हिंद महासागर से लगती है और इसकी दो सीमाएँ बंगाल की खाड़ी और अरब सागर तक फैली हुई हैं।

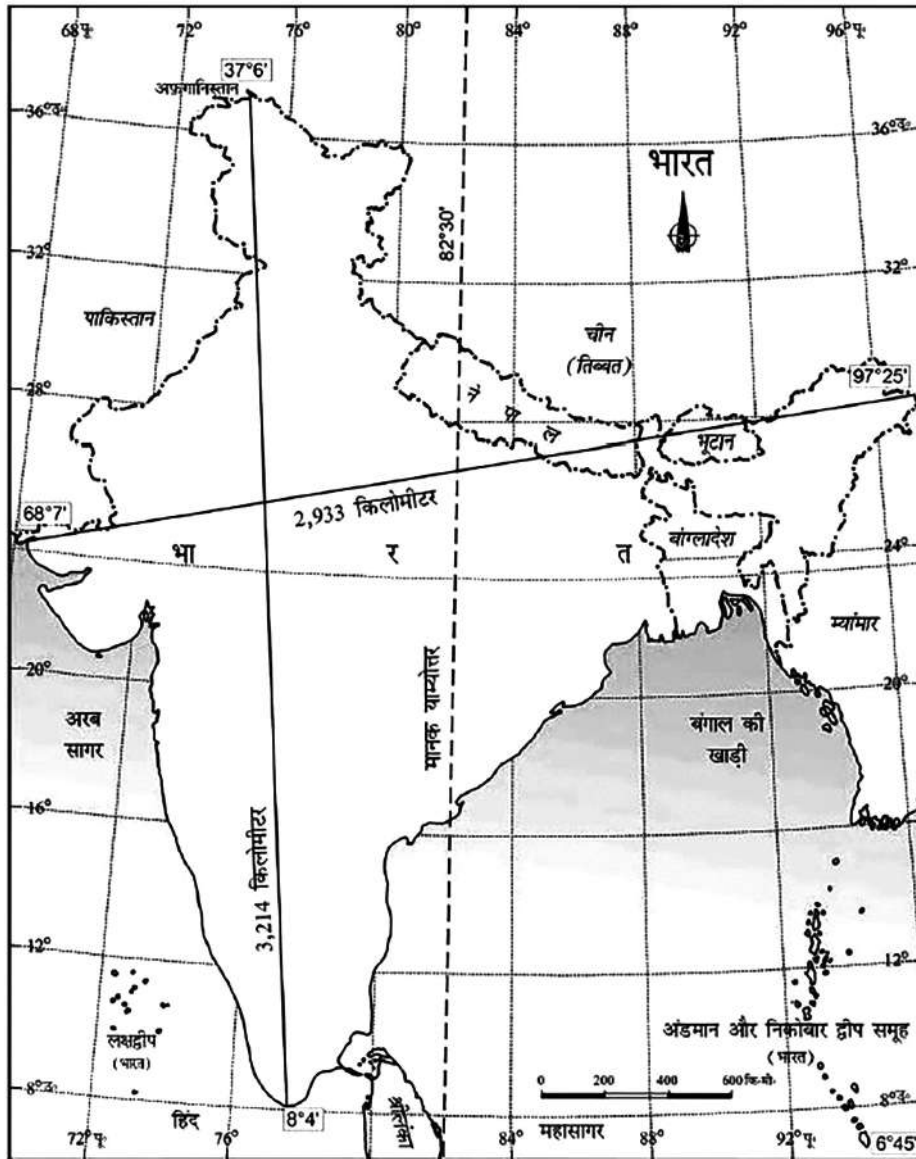


चित्र 1.2

- प्रायद्वीपीय भारत की समुद्री स्थिति ने समुद्री और वायु मार्गों के माध्यम से अपने पड़ोसी राष्ट्रों को मार्ग प्रदान किया है।
- सात देश अर्थात् उत्तर पश्चिम में पाकिस्तान और अफगानिस्तान, उत्तर में चीन, नेपाल और भूटान तथा पूर्व में म्यांमार और बांग्लादेश भारत के साथ सीमा साझा करते हैं। (चित्र 1.2 देखें)
- भारत के पड़ोसियों में अफगानिस्तान, नेपाल और भूटान की किसी महासागर या समुद्र तक पहुँच नहीं है।
- हिंद महासागर में हमारे पड़ोसी द्वीप-श्रीलंका और मालदीव स्थित हैं। श्रीलंका मन्नार की खाड़ी और पाक जलडमरूमध्य द्वारा भारत से अलग होता है जबकि मालदीव द्वीप समूह लक्षद्वीप द्वीप समूह के दक्षिण में स्थित है।
- भारत के अपने पड़ोसियों के साथ मजबूत भौगोलिक और ऐतिहासिक संबंध रहे हैं।

भारत का भौगोलिक विस्तार

- भारत उत्तरी गोलार्द्ध में स्थित है। उत्तर से दक्षिण तक $8^{\circ}4'$ उत्तर और $37^{\circ}6'$ उत्तर अक्षांशों के बीच (लद्दाख से कन्याकुमारी तक लगभग 3,200 किमी.) और पूर्व से पश्चिम तक $68^{\circ}7'$ पूर्व और $97^{\circ}25'$ पूर्व देशांतर के बीच (अरुणाचल प्रदेश से कच्छ तक लगभग 2,900 किमी.) भारत का मुख्य भाग फैला हुआ है (चित्र 1.3 देखें)।



चित्र 1.3: भारत: देशांतरीय विस्तार और मानक मध्याह्न रेखा

- मुख्य भूमि के दक्षिण-पूर्व तथा दक्षिण-पश्चिम में क्रमशः अंडमान और निकोबार द्वीप समूह एवं लक्षद्वीप द्वीप समूह बंगाल की खाड़ी और अरब सागर में स्थित हैं।
- इसके अलावा, इसकी स्थल सीमा लगभग 15,200 किमी. है और भारत की समुद्र तट की कुल लंबाई (अंडमान और निकोबार तथा लक्षद्वीप द्वीप समूह सहित) 7,516.6 किमी. है।
- भारत की क्षेत्रीय सीमा तट से 12 समुद्री मील (लगभग 21.9 किमी.) तक समुद्र की ओर फैली हुई है।

क्या आप जानते हैं?

$82^{\circ}30'$ पूर्व को भारत के मानक मध्याह्न रेखा के रूप में चुना गया है क्योंकि यह भारत के केंद्र से होकर गुजरती है।



ONLYIAS
BY PHYSICS WALLAH

NCERT WALLAH

अभ्यास पुस्तिका

भूगोल एवं
पर्यावरण

सिविल सेवा परीक्षाओं हेतु

विषय सूची

भौतिक भूगोल के मूल सिद्धांत

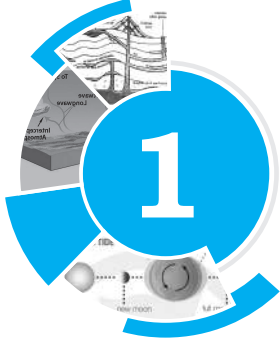
| | | |
|-----|---|----|
| 1. | भूगोल एक विषय के रूप में | 3 |
| 2. | पृथ्वी की उत्पत्ति एवं विकास | 7 |
| 3. | पृथ्वी की आंतरिक संरचना | 10 |
| 4. | महासागरों एवं महाद्वीपों का वितरण | 14 |
| 5. | भू-आकृतिक प्रक्रियाएँ | 18 |
| 6. | भू-आकृतियाँ तथा उनका विकास | 22 |
| 7. | वायुमंडल का संघटन एवं संरचना | 26 |
| 8. | सौर विकिरण, ऊष्मा संतुलन एवं तापमान | 29 |
| 9. | वायुमंडलीय परिसंचरण तथा मौसम प्रणालियाँ | 33 |
| 10. | वायुमंडल में जल | 37 |
| 11. | विश्व की जलवायु एवं जलवायु परिवर्तन | 41 |
| 12. | महासागर और उसकी गतिविधियाँ | 45 |
| 13. | पारिस्थितिकी तंत्र | 49 |
| 14. | जैव विविधता एवं संरक्षण | 53 |

मानव भूगोल

| | | |
|----|----------------------------------|----|
| 1. | मानव भूगोल: प्रकृति और क्षेत्र | 59 |
| 2. | जनसंख्या: वितरण, घनत्व और वृद्धि | 61 |
| 3. | प्राथमिक गतिविधियाँ | 69 |
| 4. | द्वितीयक गतिविधियाँ | 75 |
| 5. | तृतीयक और चतुर्थक गतिविधियाँ | 79 |
| 6. | व्यापार, परिवहन और संचार | 83 |
| 7. | संसाधन | 89 |

भारतीय भौतिक भूगोल

| | | |
|----|----------------------------|-----|
| 1. | अवस्थिति | 95 |
| 2. | संरचना और भू-आकृति विज्ञान | 104 |
| 3. | अपवाह तंत्र | 110 |
| 4. | जलवायु | 119 |
| 5. | प्राकृतिक घटनाएँ और आपदाएँ | 125 |
| 6. | मृदा | 130 |
| 7. | प्राकृतिक वनस्पति | 132 |



भूगोल एक विषय के रूप में

प्रारंभिक परीक्षा के लिए अभ्यास प्रश्न

1. भूगोल के व्यवस्थित दृष्टिकोण के आधार पर निम्नलिखित में से कौन मानव भूगोल का हिस्सा हैं ?

1. सांस्कृतिक भूगोल
2. जनसंख्या और अधिवास भूगोल
3. आर्थिक भूगोल
4. मृदा भूगोल
5. ऐतिहासिक भूगोल

नीचे दिए गए कूट का उपयोग कर सही उत्तर का चयन कीजिए:

- (a) केवल 2, 4 और 5
- (b) 1, 2, 3 और 5
- (c) केवल 4 और 5
- (d) केवल 1, 4 और 5

2. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. भूगोल का संबंध पृथ्वी की सतह के क्षेत्रीय विभेदीकरण के विवरण और स्पष्टीकरण से है।
2. भूगोल में आमतौर पर पृथ्वी की सतह के विभिन्न भागों से संबंधित परिघटनाओं के अंतर का अध्ययन किया जाता है।

भूगोल के विषय क्षेत्र के संबंध में उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?

- (a) केवल 1
- (b) केवल 2
- (c) 1 और 2 दोनों
- (d) न तो 1 और न ही 2

3. भौतिक भूगोल में निम्न का अध्ययन शामिल है:

1. भू-आकृतियाँ
2. अपवाह तंत्र
3. मौसम और जलवायु
4. तापमान और दाब
5. कृषि
6. महासागर और झीलें

नीचे दिए गए कूट का उपयोग कर सही उत्तर का चयन कीजिए:

- (a) 2, 3, 4, 5 और 6
- (b) केवल 2, 5 और 6
- (c) केवल 3, 4 और 5
- (d) 1, 2, 3, 4 और 6

4. निम्नलिखित में से कौन से कारक मृदाजनन (Pedogenesis) के लिए जिम्मेदार हैं?

1. जलवायु
2. जैविक जीव
3. समय
4. मूल सामग्री

नीचे दिए गए कूट का उपयोग कर सही उत्तर का चयन कीजिए:

- (a) केवल 1 और 2
- (b) केवल 1, 2 और 3
- (c) केवल 1, 3, और 4
- (d) 1, 2, 3 और 4

5. भूगोल की निम्नलिखित शाखाओं को उनसे संबद्ध विशेषताओं से सुमेलित कीजिए:

| शाखाएँ | विशेषताएँ |
|---------------------|--------------------------|
| A. भू-आकृति विज्ञान | 1. संस्कृति |
| B. सामाजिक भूगोल | 2. मृदाजनन (पेडोजेनेसिस) |
| C. राजनीतिक भूगोल | 3. भू-आकृतियाँ |
| D. मृदा भूगोल | 4. सीमाएँ |

नीचे दिए गए कूट का उपयोग कर सही उत्तर का चयन कीजिए:

- (a) A-4; B-3; C-2; D-1
- (b) A-3; B-4; C-2; D-1
- (c) A-3; B-1; C-4; D-2
- (d) A-1; B-2; C-3; D-4

मुख्य परीक्षा अभ्यास प्रश्न

1. मानव भूगोल का क्या अभिप्राय है? और इसके अध्ययन का क्षेत्र क्या है?
2. जीव-भूगोल से आप क्या समझते हैं? इसके विभिन्न क्षेत्रों को परिभाषित कीजिए।
3. भू-आकृति विज्ञान और जलवायु विज्ञान के मध्य क्या संबंध है उस पर प्रकाश डालिए।

उत्तर

1. (b)
2. (c)
3. (d)
4. (d)
5. (c)

व्याख्या

1. उत्तर: (b)

व्याख्या:

मानव भूगोल, भूगोल की वह शाखा है जिसमें मानव समुदायों, संस्कृतियों, अर्थव्यवस्थाओं और पर्यावरण के साथ उनकी अंतःक्रियाओं के बीच स्थानिक संबंधों का अध्ययन किया जाता है। मानव भूगोल (Human geography) को एंथ्रोपोज्योग्राफी (Anthropogeography) के नाम से भी जाना जाता है। **मानव भूगोल में निम्नलिखित आयाम शामिल हैं:**

विकल्प 1 सही है: सामाजिक/सांस्कृतिक भूगोल, जो समाज के अध्ययन, समाज की स्थानिक गतिशीलता और समाज के सांस्कृतिक पहलुओं को शामिल करता है, मानव भूगोल का एक अभिन्न अंग है।

विकल्प 2 सही है: जनसंख्या भूगोल में जनसंख्या वृद्धि, घनत्व, वितरण, प्रवासन, लिंगानुपात, व्यावसायिक संरचना इत्यादि का अध्ययन शामिल है। **अधिवास भूगोल** शहरी और ग्रामीण बस्तियों की विशेषताओं से संबंधित है। इन दोनों का अध्ययन मानव भूगोल के भाग के रूप में किया जाता है।

विकल्प 3 सही है: आर्थिक भूगोल लोगों की आर्थिक गतिविधियों से संबंधित है जिसमें कृषि, उद्योग, सेवाएँ, व्यापार, परिवहन, बुनियादी ढाँचा आदि शामिल हैं और यह मानव भूगोल का भी एक भाग है।

विकल्प 4 सही नहीं है: भूगोल के अध्ययन के व्यवस्थित दृष्टिकोण के तहत, **मृदा भूगोल का अध्ययन भौतिक भूगोल के एक भाग के रूप में किया जाता है**, और यह मृदा के निर्माण, प्रकार, उर्वरता आदि के अध्ययन के लिए समर्पित है।

विकल्प 5 सही है: ऐतिहासिक भूगोल में उन ऐतिहासिक प्रक्रियाओं का अध्ययन किया जाता है जिनके माध्यम से स्थान व्यवस्थित होता है। प्रत्येक क्षेत्र अपनी वर्तमान स्थिति प्राप्त करने से पहले कुछ ऐतिहासिक अनुभवों से गुजरा है, जो मानव भूगोल का एक पहलू भी है।

राजनीतिक भूगोल, मानव भूगोल के अंतर्गत एक अन्य उप-विषय है जो राजनीतिक घटनाओं की दृष्टि से स्थान (space) को देखता है, पड़ोसी राजनीतिक इकाइयों के बीच सीमाओं और स्थान के संबंधों का अध्ययन करता है और जनसंख्या के राजनीतिक व्यवहार को समझने के लिए एक सैद्धांतिक ढाँचा विकसित करता है।

2. उत्तर: (c)

व्याख्या:

कथन 1 सही है: रिचर्ड हार्टशोर्न (Richard Hartshorne) के अनुसार, "भूगोल का संबंध पृथ्वी की सतह के क्षेत्रीय विभेदीकरण (Areal Differentiation) के विवरण और व्याख्या से है।" पृथ्वी की सतह का विभाजन इसलिए किया जाता है क्योंकि प्रत्येक भौगोलिक क्षेत्र की अपनी विशिष्टता होती है जो अन्य भौगोलिक क्षेत्रों से भिन्न होती है। इन सजातीय क्षेत्रों की (अन्य सजातीय क्षेत्रों से) विशिष्टता और भिन्नता के अध्ययन को क्षेत्रीय विभेदीकरण कहा जाता है। उदाहरण के लिए, अध्ययनों से पता चला है कि आर्कटिक और उप-आर्कटिक के क्षेत्र अन्य क्षेत्रों की तुलना में अधिक तेजी से गर्म हो रहे हैं, जिससे भौतिक परिदृश्य में महत्वपूर्ण बदलाव आ रहे हैं।

कथन 2 सही है: हेटनर ने भूगोल की अपनी परिभाषा दी, "भूगोल आमतौर पर पृथ्वी की सतह के विभिन्न भागों में संबंधित परिघटनाओं के अंतर का अध्ययन करता है।" उनके विचार में, भूगोल मूलतः पृथ्वी की सतह पर भौगोलिक वितरण का अध्ययन था। पृथ्वी की सतह पर घटनाओं में स्थानीय अंतर का अध्ययन इस अवधारणा का मुख्य बिंदु था।

3. उत्तर: (d)

व्याख्या:

भौतिक भूगोल, भूगोल की एक शाखा है जिसमें निम्नलिखित का अध्ययन शामिल है:

स्थलमंडल का अध्ययन (भू-आकृतियाँ, अपवाह, उच्चावच और भूआकृति विज्ञान सहित): विकल्प 1 और 2 सही हैं

वायुमंडल का अध्ययन (संघटन, संरचना, तत्त्व, मौसम और जलवायु कारक, तापमान, दबाव, पवनें, वर्षा, जलवायु प्रकार आदि सहित): विकल्प 3 और 4 सही हैं।

जलमंडल का अध्ययन (जैसे महासागर, सागर, झील, लवणता, प्रवाह, आदि): विकल्प 6 सही है।

जीवमंडलों जैसे जीवन रूपों, पारिस्थितिकी तंत्र और अन्य संबंधित परिघटनाओं का अध्ययन किया जाता है।

मानव भूगोल के एक भाग के रूप में कृषि एवं मनुष्य की अन्य आर्थिक गतिविधियों का अध्ययन किया जाता है। विकल्प 5 सही नहीं है।

4. उत्तर: (d)

व्याख्या:

मृदा के निर्माण की प्रक्रिया को मृदाजनन (पेडोजेनेसिस) कहा जाता है। यह कई कारकों पर निर्भर करती है:



चित्र: पेडोजेनेसिस के लिए जिम्मेदार कारक।

1. जलवायु: विकल्प 1 सही है।
2. जैवक्रिया: विकल्प 2 सही है।
3. समय: विकल्प 3 सही है।
4. मूल चट्टान: विकल्प 4 सही है।

5. उत्तर: (c)

व्याख्या:

- A. भू-आकृति विज्ञान: यह भू-आकृतियों, उनके क्रमिक विकास और संबंधित प्रक्रियाओं के अध्ययन के लिए समर्पित है।
- B. सामाजिक/सांस्कृतिक भूगोल: इसमें समाज और इसकी स्थानिक गत्यात्मकता (Spatial Dynamics) के साथ-साथ समाज के योगदान से निर्मित सांस्कृतिक तत्वों का अध्ययन शामिल है।
- C. राजनीतिक भूगोल: यह क्षेत्र को राजनीतिक घटनाओं की दृष्टि से देखता है और सीमाओं, निकटस्थ राजनीतिक इकाइयों के बीच भू-वैचारिक संबंधों (Space Relations), निर्वाचन क्षेत्रों के परिसीमन और चुनाव परिदृश्यों का अध्ययन करता है तथा जनसंख्या के राजनीतिक व्यवहार को समझने के लिए सैद्धांतिक रूपरेखा विकसित करता है।
- D. पेडोजेनेसिस को उस विज्ञान के रूप में परिभाषित किया गया है जो मृदा की उत्पत्ति का अध्ययन करता है और इसका अध्ययन मृदा भूगोल के अंतर्गत किया जाता है।

मॉडल उत्तर

1. मानव भूगोल से आपका क्या अभिप्राय है और इसके अध्ययन का क्षेत्र क्या है?

उत्तर: मानव भूगोल भूगोल की वह शाखा है जो मानव समुदायों के बीच स्थानिक संबंधों का अध्ययन करती है। यह विशिष्ट संस्कृतियों की परवाह किए बिना मानव और उनकी गतिविधियों पर ध्यान केंद्रित करके स्वयं को भूगोल की अन्य शाखाओं से अलग करती है।

इसके अध्ययन के क्षेत्र में मानव संस्कृतियाँ, अर्थव्यवस्थाएँ और पर्यावरण के साथ उनकी अंतःक्रियाएँ शामिल हैं। यह अवस्थिति (Location), स्थान (Place), मनुष्य और पर्यावरण के बीच अंतःक्रिया, एक स्थान से दूसरे स्थान पर उनकी आवाजाही और क्षेत्रीय भिन्नता का अध्ययन करता है।

2. जीव-भूगोल (Biogeography) से आप क्या समझते हैं? इसके विभिन्न क्षेत्रों को परिभाषित कीजिए।

उत्तर: मानव भूगोल और भौतिक भूगोल के बीच इंटरफेस को जीव-भूगोल के रूप में जाना जाता है।

जीव-भूगोल के तीन मुख्य क्षेत्र हैं

- ❖ ऐतिहासिक - ऐतिहासिक जीव-भूगोल मुख्य रूप से विकासवादी दृष्टिकोण से जीवों के वितरण से संबंधित है।
- ❖ पारिस्थितिकीय - पारिस्थितिकीय जीव-भूगोल पर्यावरण और उसमें मौजूद प्रजातियों से संबंधित है।
- ❖ संरक्षित - संरक्षित जीव-भूगोल प्रकृति, प्रजातियों के संरक्षण और उनके बीच स्थिरता बनाए रखने से संबंधित है।

इस प्रकार, इसकी प्रत्येक शाखा प्रजातियों के वितरण को एक अलग दृष्टिकोण से देखती है।

इस शृंखला की अन्य पुस्तकें

